आज की मुरली पर सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 09-07-2014

बाबा ने आज पूरी मुरली में अपनी महिमा के अनुसार जितने भी महा-वाक्य कहे हैं, उसे एक बार लिखेंगे जिससे हमें बाबा की याद पक्की होती जाए.

- दुख हर्ता, सुख कर्ता --> दुख हर्ता सुख कर्ता एक बाप हैं, वही तुम्हारे सब दुःख दूर करते हैं, मनुष्य किसी के दुःख दूर कर नहीं सकते.

- रचयिता --> बाप आकर एक सत धर्म की स्थापना करते हैं. उनको ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता हैं. बेहद का बाप नयी दुनिया, स्वर्ग (सतयुग-त्रेतायुग) की स्थापना करते हैं. वहाँ कम्पलीट पवित्रता, सुख, शांति, हेल्थ, वैल्थ आदि सब था. बाप खुद ही अपना अर्थात रचयिता और रचना का परिचय देते हैं. रचयिता हैं बेहद का बाप. आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन हैं नहीं जो बाप स्थापन कर रहे हैं.

- विश्व कल्याणकारी --> कल्याणकारी बाप फिरसे वह नई दुनिया बना रहे हैं, उसमें अशान्ति का नाम नहीं. बाप को ही कल्याणकारी कहा जाता हैं. वह आते ही हैं पुरुषोतम संगमयुग पर. कल्याणकारी युग में कल्याणकारी बाप आकर सबका कल्याण करते हैं. पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया स्थापन कर देते हैं.

- ज्ञान सागर --> रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं, रुहानी बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता हैं. परमपिता परमात्मा ही ज्ञान सागर हैं. विधा हैं गीता का ज्ञान. वह ज्ञान तो हैं ही एक बाप में. जिसको ज्ञान सागर कहा जाता हैं, जिसे मनुष्यमात्र जानते नहीं हैं. सब आत्मायें भाई-भाई हैं. आत्माओं का बाप एक ही परमपिता परमात्मा है, उनको ही ज्ञान सागर कहेंगे. ज्ञान सागर बाप ही रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं.

- भगवान --> तुम बच्चे जब किसको समझाते हो तो बोलो शिव भगवानुवाच. पहले तो यह समझें कि ज्ञान सागर एक ही परमपिता परमात्मा हैं, जिसका नाम हैं शिव. शिवरात्रि भी मनाते हैं, परन्तु किसको भी समझ में नहीं आता हैं. जरूर शिव आया हुआ हैं तब तो रात्रि मनाते हैं. शिव कौन हैं - यह भी नहीं जानते. बाप कहते हैं भगवान तो सबका एक ही हैं.

- पतित-पावन --> अभी अशान्ति हैं पुरानी दुनिया कलियुग में. इस लिए अभी पुकारते हैं हम पतित हैं, हे पतित-पावन आओ. अब प्रश्न हैं पतित-पावन कौन? कृष्ण को तो नहीं कहेंगे. पतित-पावन परमपिता परमात्मा ही हैं.

- ग़रीब-निवाज़ --> बाप कहते हैं मैं हूँ ही गरीब निवाज़. मैं आता भी तब हूँ जब भारत गरीब बन जाता हैं. भारत पर राहु का ग्रहण बैठ जाता हैं. अब राहु का ग्रहण भारत पर तो क्या सारे वर्ल्ड पर हैं इसलिए बाप फिर भारत में आते हैं, आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता हैं.

- सद्गति दाता ---> शिव भगवानुवाच - मैं तुमको राजाओं का राजा, डबल सिरताज स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ. उनसे बेहद का वर्सा मिलता हैं. सद्गति कहा जाता हैं नई दुनिया स्वर्ग को, दुर्गति कहा जाता है पुरानी दुनिया नर्क को. ज्ञान से सद्गति होती हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email -- a.brahmin.soul@gmail.com